देहली 6

हर जवाब के पीछे का सवाल।

अपनी ज़िंदगी के बड़े हिस्से में मैं जवाबों के पीछे भागा हूँ।

जैसा लगभग सभी करते हैं।

मैं जानना चाहता था कि सही फ़ैसला कौन-सा है।

सबसे अच्छा रास्ता कौन-सा है।

जो मैं जी रहा था, उसका अर्थ क्या है।

मुझे स्पष्टता चाहिए थी।

दिशा।

पुष्टि।

मैं मानता था कि परिपक्वता जवाब जमा करने में है।

जितना समय बीतता, उतना ही मुझे उसका चलन समझ में आ जाना चाहिए था।

जितना अनुभव जमा करता, उतने ही कम संदेह रहते।

यह एक सुघड़ सिद्धांत था।

दिक़्क़त यह थी कि ज़िंदगी उसे पूरी तरह अनदेखा करती लगती थी।

साल बीतते जाते थे।

अनुभव बढ़ता जाता था।

ज़िम्मेदारियाँ बढ़ती जाती थीं।

फिर भी सवाल कम नहीं होते थे।

उलटा।

वे और गहरे होते जाते थे।

और पेचीदा।

और मुश्किल।

यह एक हिला देने वाली खोज थी।

लड़कपन में मैं बड़ों को ऐसे लोग समझता था जिन्होंने समझ लिया है।

फिर मैं ख़ुद बड़ा हुआ।

और पाया कि हममें से बहुतों ने बस अनिश्चितता के साथ जीना सीख लिया था।

यह एक ही बात नहीं है।

जानने और चलते रहने में बहुत बड़ा फ़र्क़ है।

बहुत से चलते रहते हैं।

सचमुच जानते कम ही हैं।

मुझे एक दौर याद है जब मैं हर जगह जवाब ढूँढ़ता था।

किताबों में।

संगठनों में।

सफ़रों में।

ज़्यादा अनुभवी लोगों में।

अध्यात्म में।

तर्कबुद्धि में।

आँकड़ों में।

मैं मानता था कि कहीं न कहीं एक ऐसी व्याख्या है जो सब कुछ सुव्यवस्थित कर सकती है।

एक सूत्र।

एक कुंजी।

एक प्रणाली।

पर जब भी मुझे लगता कि वह मिल गई, कोई नया अनुभव आकर उस पर सवाल उठा देता।

शुरू में यह खीझ भरा था।

फिर दिलचस्प हो गया।

आख़िर में मुक्त करने वाला हो गया।

क्योंकि मैंने एक बात समझ ली।

जवाबों की उम्र छोटी होती है।

सही सवालों की उम्र लंबी होती है।

बहुत लंबी।

कुछ दशकों तक हमारे साथ चलते हैं।

मैं कौन हूँ?

सचमुच क्या मायने रखता है?

प्रेम करने का मतलब क्या है?

किस चीज़ के लिए दुख उठाना सार्थक है?

जब सब कुछ बदल जाता है, तब क्या बचता है?

ये सुलझाए जाने वाले सवाल नहीं हैं।

ये ऐसे सवाल हैं जिनमें बसा जाता है।

फ़र्क़ बुनियादी है।

जवाब बंद करता है।

सवाल खोलता है।

और ज़िंदगी, दरअसल, खुलने को ही पसंद करती है।

जब भी मैं किसी नए अनुभव से गुज़रता, पाता कि मूल्य उतना उस निष्कर्ष में नहीं था जिस तक पहुँचा था।

वह उस सवाल में था जो उसने पैदा किया था।

एक क्षति एक सवाल पैदा करती है।

एक प्रेम एक सवाल पैदा करता है।

एक बीमारी एक सवाल पैदा करती है।

एक जीत एक सवाल पैदा करती है।

यहाँ तक कि सफलता भी एक सवाल पैदा करती है।

अक्सर असफलता से कहीं ज़्यादा मुश्किल।

क्योंकि कुछ हासिल कर लेने के बाद एक अप्रत्याशित सवाल सामने आ खड़ा होता है:

"और अब?"

बरसों मैं मानता रहा था कि चीज़ों का अर्थ जवाबों में छिपा है।

फिर मुझे एक अजीब संयोग नज़र आने लगा।

जो सबसे दिलचस्प लोग मुझे मिलते थे, वे सबसे कम यक़ीन वाले भी होते थे।

वे दुविधा में नहीं थे।

वे खुले थे।

वे समझते थे कि हक़ीक़त उनकी धारणाओं से ज़्यादा विशाल है।

उनके ढाँचों से ज़्यादा पेचीदा।

उनके निष्कर्षों से ज़्यादा समृद्ध।

इसीलिए वे सवाल पूछते रहते थे।

कमज़ोरी से नहीं।

समझदारी से।

असली बुद्धिमत्ता बहुत से जवाब रखने में नहीं है।

यह पहचानने में है कि कौन-से सवाल अब भी पूछे जाने लायक़ हैं।

अपनी ज़िंदगी में मैं अलग-अलग देशों में गया हूँ।

अलग-अलग संस्कृतियों में।

अलग-अलग धर्मों में।

अलग-अलग प्रणालियों में।

हर जगह के अपने अलग जवाब थे।

फिर भी बुनियादी सवाल लगभग हमेशा एक जैसे थे।

कैसे जिया जाए।

कैसे प्रेम किया जाए।

मौत का सामना कैसे किया जाए।

समय के साथ कैसे निभाया जाए।

अर्थ कैसे खोजा जाए।

इस बात ने मुझे गहरे छुआ।

क्योंकि यह कुछ सार्वभौमिक दिखाती थी।

सभ्यताएँ भाषा बदल लेती हैं।

बुनियादी सवाल नहीं बदलते।

शायद ठीक इसीलिए कथा-साहित्य ज़िंदा रहता है।

क्योंकि वह समाधान नहीं देता।

वह खोजें देता है।

उपन्यास ज़िंदगी सुलझाने के काम नहीं आता।

वह एक सवाल को रोशन करने के काम आता है।

और एक अच्छा सवाल बरसों तक किसी इंसान के साथ चल सकता है।

बहुत से जवाबों से बेहतर।

मुझे एक दिन याद है जब मैं उन सारे यक़ीनों पर सोचने बैठा जिन्हें मैं छोड़ चुका था।

वे बहुत सारे थे।

कई ने मेरी ज़िंदगी के लंबे दौरों पर राज किया था।

कुछ काम के रहे थे।

कुछ कम।

पर सबने किसी ज़्यादा परिपक्व चीज़ के लिए जगह छोड़ दी थी।

यह बोध कि हक़ीक़त कोई अदालत नहीं है।

वह एक संवाद है।

एक अनंत संवाद, उसके बीच जो हम जानते हैं और जो नहीं जानते।

उसके बीच जो हम समझते हैं और जो हाथ से फिसल जाता है।

उसके बीच जो हम रहे हैं और जो हम बनते जा रहे हैं।

उस पल से मैंने संदेहों को दुश्मन मानना छोड़ दिया।

उन्हें सफ़र के साथी मानने लगा।

सभी संदेह ध्यान के लायक़ नहीं होते।

कुछ शोर होते हैं।

कुछ डर होते हैं।

कुछ महज़ उलझन होते हैं।

पर कुछ और भी होते हैं।

ज़्यादा गहरे।

ज़्यादा ख़ामोश।

ज़्यादा सच्चे।

वे, जो लौट-लौटकर आते हैं।

वे, जो साल-दर-साल अंतरात्मा का दरवाज़ा खटखटाते हैं।

वे, जो सुने जाने की माँग करते हैं।

मैंने उनका सम्मान करना सीख लिया है।

क्योंकि वे अक्सर कुछ अहम सँजोए होते हैं।

एक रूपांतरण।

एक सच।

एक दिशा।

हमारा एक हिस्सा, जो अब तक अनदेखा है।

पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो अब मुझ पर वे लोग असर नहीं छोड़ते जिनके पास हर चीज़ का जवाब है।

मुझे वे ज़्यादा दिलचस्प लगते हैं जो एक सच्चा सवाल पूछना जानते हैं।

क्योंकि जवाब चुक सकता है।

एक सवाल पूरी ज़िंदगी को जन्म दे सकता है।

शायद यह उन सबसे क़ीमती सबक़ों में से एक है जो समय ने मुझे दिए हैं।

सिर्फ़ जवाब मत ढूँढ़ो।

वह सवाल ढूँढो जिसने उसे जन्म दिया।

क्योंकि हर अर्थपूर्ण धारणा के पीछे।

हर असली बदलाव के पीछे।

हर अहम चुनाव के पीछे।

हर उस कहानी के पीछे जो सुनाए जाने लायक़ है।

हमेशा एक अदृश्य सवाल होता है।

और सफ़र वहीं से शुरू होता है।

जवाब से बहुत पहले।